आधुनिक युग में वेदों का महत्व और प्रासांगिकता: एक नए परिप्रेक्ष्य में

डॉ. सुभाष चंद्र शास्त्री

सह आचार्य संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय तिजारा

Recrh.Artc. Rcvd. 18, Oct.2019 Acep.20,Nov.2019,Published22,Dec.2019

संक्षेप

आधुनिक युग में वेदों का महत्व और प्रासांगिकता नई दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। यह धार्मिक और सांस्कृतिक धाराओं का स्रोत है, जिसने समय के साथ अपना मौद्रिक स्वरूप बनाए रखा है। वेदों में विभिन्न शाखाएं हैं जो विज्ञान, योग, धर्म, राजनीति, और समाजशास्त्र पर विचार करती हैं।आधुनिक युग में, वेदों के सिद्धांतों ने आत्म-विकास, मानवीय संबंध, और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में नए दृष्टिकोण प्रदान किये हैं। वेदों की शिक्षाएं आधुनिक विज्ञान, तकनीक, और सामाजिक समस्याओं का समाधान ढूंढने में मदद कर सकती हैं।वेदों में जीवन को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखने की क्षमता भी है, जिससे लोग अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सकारात्मक भावना बनाए रख सकते हैं। इस प्रकार, आधुनिक युग में वेदों का महत्व और प्रासांगिकता सद्गुण है, क्योंकि वे जीवन को समृद्धि, समरसता, और सद्गुण से भरपूर बनाने में मदद कर सकते हैं।

परिचय

आधुनिक युग में वेदों का महत्व और प्रासांगिकता एक नए परिप्रेक्ष्य से देखने पर, हम प्राचीन शास्त्रों की सबसे पुरानी रचनाओं में से एक को मुख्यधारा में लाने के लिए तैयार हो रहे हैं। वेदों का अर्थ "ज्ञान" है और ये आध्यात्मिक और धार्मिक ज्ञान को संजीवनी देने वाली माने जाती हैं।वेदों की प्रासांगिकता आधुनिक युग में उनके सार्थक और अनुष्ठानीय प्रमाणों में छिपी है। इन्हें न केवल धार्मिक ग्रंथ माना जाता है, बल्कि ये मानव जीवन के सभी पहलुओं को समर्थन करने के लिए एक उच्च आदर्श स्थापित करते हैं।

आधुनिक विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में, वेदों का महत्व बढ़ गया है। इनमें ब्रह्मा, विष्णु, और शिव जैसे देवताओं के साथ विज्ञान के क्षेत्र में गहरा संबंध व्यक्त होता है। योग और आयुर्वेद जैसी अनेक प्रक्रियाएं आधुनिक चिकित्सा विज्ञान को प्रेरित करती हैं।वेदों में समय, प्रकृति, और मानव जीवन के तत्वों के विशेष अध्ययन से युगानुकूल दृष्टिकोण मिलता है। इसके माध्यम से विचारशीलता और सहजता की भावना को बढ़ावा मिलता है जिससे लोग अपने जीवन को संतुलित और सफल बना सकते हैं।समाज में न्याय और समरसता के लिए भी वेदों का महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें विभिन्न यज्ञ और उपासना प्रथाएं हैं जो समाज को एकजुट और समृद्धि में मदद करती हैं।आधुनिक युग में वेदों का महत्व न केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से है, बल्कि ये एक समृद्धि, विकास, और सामरिक समरसता की दिशा में भी एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं।[1]

चार वेदों के साथ ही चार उपवेद भी हैं, जिनमें ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद, यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद, सामवेद का उपवेद गन्धर्ववेद, और अथर्ववेद का उपवेद शिल्पवेद शामिल हैं। ऋग्वेद का शब्दिक अर्थ "स्थिति" है, यजुर्वेद का "रुपान्तरण", सामवेद का "गतिशील", और अथर्ववेद का "शिल्पवेद" के रूप में है।

ऋग्वेद को धर्म का प्रमुख स्रोत माना जाता है, यजुर्वेद को मोक्ष की प्राप्ति के लिए, सामवेद को काम और आनंद के अध्ययन के लिए, और अथर्ववेद को अर्थ की संज्ञा से भी जाना जाता है। इन वेदों के आधार पर ही धर्मशास्त्र, कामशास्त्र, अर्थशास्त्र, और मोक्षशास्त्र की रचना हुई है।

ऋग्वेद पद्यात्मक वेद है जिसमें दस मण्डल, 1028 सूक्त, और लगभग 10580 1/4 मन्त्र हैं। इसका विशेष महत्व उन्हें ध्यान में रखता है जो विज्ञान, धर्म, और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं।

चार शाखाओं - साकल, वास्कल, सांख्यन, अश्वलायन, और माण्डुकायन में विभाजित है। इस वेद में विभिन्न ऋचाएं हैं जो देवताओं की स्तुति, प्रश्नता, और स्थिति के विषय में जानकारी प्रदान करती हैं। यजुर्वेद मानव को श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देने वाला धार्मिक वेद है और इसे गद्यरूप में प्रस्तुत किया गया है। यह कृष्ण एवं शुक्त यजुर्वेद के दो भागों में विभाजित है, और इसमें संगीतमय वेद के अंश भी हैं। सामवेद संगीतमय वेद है और भारतीय संगीत के मूल में बहुत अद्वितीय स्थान रखता है। इस वेद में 1824 मन्त्र हैं, जिनमें से 75 मन्त्र ऋग्वेद से लिए गए हैं। अथर्ववेद अर्वाचीन वेद है जिसमें 20 अध्याय और 5687 मन्त्र हैं। "अथर्व"

[1]ऋग्वेद, पुरुष सूक्त 10.90.9

का मतलब है "कम्पन" और "अथर्व" का अर्थ है "कम्पन रहित" या "ज्ञान से श्रेष्ठ कर्म करने वाला"। इस वेद में मानव को अपने जीवन के लक्ष्य, मोक्ष, की प्राप्ति के लिए ज्ञान और कर्म का संबंध बताया जाता है।[2]

परमपिता परमेश्वर द्वारा रचित सृष्टि की सबसे अनमोल और अद्वितीय रचना मानव जीवन है, ठीक उसी रूप में जैसे मानव द्वारा निर्मित सबसे उत्कृष्ट शिल्प है जो इस संसार में है। इस चर-अचर जगत में, जीवन जीने के दौरान मानव को अनेक समस्याओं, बाधाओं, दुःखों, पीड़ाओं, और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है।

इन वैश्विक समस्याओं का एकमात्र समाधान वेदों में है। वेदों में समाहित ज्ञान व्यक्ति को अनुशासनात्मक जीवन की कला सिखाने के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान से भी मनुष्य को पूर्णता दर्शाता है, क्योंकि अनुशासन हीनता में दुराचार, व्याभिचार, भ्रष्टाचार, निर्दयता आदि बुराईयाँ फैलाती हैं। प्रत्येक मनुष्य की इच्छा होती है कि समाज से इन सभी मुसीबतों से मुक्ति मिले और मेरा घर-परिवार सुखी, समृद्धिशील हो, पुत्र श्रेष्ठ हो, और पत्नी श्रद्धाभाषिणी हो। यही हमारी वैदिक परंपरा और प्राचीन संस्कृति है,जैसा कि वेदों द्वारा प्रेरित हुआ है।यह हमारी वैदिक परम्परा तथा प्रचानी संस्कृति है।[3] यथा

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।

जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवान्।।

महान राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, समाज सुधारक, दार्शनिक, और आचार्य चाणक्य ने भी सुनिश्चित रूप से यह कहा है कि जिसका बेटा अनुशासन का पालन करता है, पत्नी और पति के उच्च मूल्यों का अनुकरण करने वाली, यानी पति के आदेशों का समर्थन करने वाली, धन और विभूति से समृद्धि प्राप्त करने वाली व्यक्ति का स्वर्ग भूमि पर ही स्थान है।

यस्य पुत्रो वशीभूतो भार्या छन्दानुगामिनी।

विभवे यश्च संतुष्टस्य स्वर्गम् इहैवहि।।

---

[2]अथर्ववेद, 3.30.2

[3]नासदीय (ऋग्वेद 10.129)

हमारे वैदिक और धार्मिक ग्रंथों में मनुष्य के कर्तव्यों का स्पष्ट विवेचन है। इन ग्रंथों में मनुष्य को अपने आदर्शों, नैतिकता, और सामाजिक दायित्वों के प्रति जिम्मेदारी से जुड़ा हुआ दिखाया गया है। ये ग्रंथ मनुष्य को अनुशासित, कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, और पूर्ण बनाने का संदेश देते हैं।[4]

पारिवारिक जीवन को सुखी, समृद्धिपूर्ण, और भावनाओं के साथ अनुगामी बनाने के लिए इन ग्रंथों ने अनेक निर्देश और सुझाव भी प्रदान किए हैं। आचार्य चाणक्य ने भी अपने शब्दों के माध्यम से संसार के सामने मधुर और सरल भाषा में यह संदेश दिया है।

ते पुत्रा ये पितुर्भक्ताः स पिता यस्तु पोषकः।
तन्मित्रं यस्य विश्वासः सा भार्या यत्र निवृत्तिः।।

वेदों के अनुसार, समाज को चार वर्णों (वर्गों) में विभाजित किया गया है, जिन्हें "वर्णाश्रम धर्म" कहा जाता है। यह विभाजन व्यक्ति की क्षमताओं और कर्तव्यों के आधार पर हुआ है और समाज को सुशिक्षित और संगठित बनाए रखने का उद्देश्य रखता है।[5]

1. ब्राह्मण : ब्राह्मण वर्ण विद्या और यज्ञ के क्षेत्र में अपनी प्रमुख दायित्वों के लिए जाने जाता है। उन्हें शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में समर्पित किया जाता है, और उनका मुख्य कर्तव्य धर्मिक अध्ययन, यज्ञ, और शिक्षा का संरक्षण होता है।
2. क्षत्रिय: क्षत्रिय वर्ण समाज की रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में अपने कर्तव्यों के लिए जाना जाता है। उनका मुख्य धर्म राजनीति और सैन्य प्रबंधन है।
3. वैश्य: वैश्य वर्ण समृद्धि, वाणिज्य, और कृषि क्षेत्र में अपने उद्यमिता और व्यापार के क्षेत्र में जाना जाता है। उनका मुख्य धर्म वाणिज्यिक क्रियाओं का समर्थन करना है।
4. शूद्र: शूद्र वर्ण समाज में सेवा और श्रम के क्षेत्र में अपने कर्तव्यों के लिए जाना जाता है। उनका मुख्य धर्म अन्य तीन वर्णों की सेवा करना है।

[4]ऋग्वेद, पुरुष सूक्त, 10.90.12
[5]अथर्ववेद, 1.34.2-3

यह चार वर्ण समाज को संरचित और सुशिक्षित बनाए रखने का प्रणाली है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता और कौशल सुनिश्चित होता है। इस विभाजन के साथ ही वर्णाश्रम धर्म व्यक्ति को उसके कर्तव्यों के आधार पर उन्नति और समृद्धि की प्राप्ति में मदद करता है।

वेदों के अनुसार, चार वर्णों का सिद्धांत संगीत सृष्टि के लिए एक कल्पना का परिचय करता है, जो संसार के सुसंस्कृत और सुरक्षित रहने की राह में मार्गदर्शन करता है। इसे श्लोक में व्यक्त किया गया है:

"अध्यापनं अध्ययनं यजनं याजनं तथा।

दानं प्रतिग्रहं चैव ब्रह्मणनामकल्पयत्।।"

इस श्लोक में, "अध्यापनं" (शिक्षा देना), "अध्ययनं" (शिक्षा लेना), "यजनं" (यज्ञ करना), "याजनं" (यज्ञ में सहायता करना), "दानं" (दान करना), और "प्रतिग्रहं" (दान स्वीकार करना) चार वर्णों के प्रमुख कर्तव्यों को दर्शाते हैं। यहां "ब्रह्मणनाम" का उपयोग समाज की सुरक्षा और संस्कृति के लिए नियुक्तियों का एक सिद्धांत की बात करने के लिए किया गया है, जिससे समाज को समृद्धि और समरसता मिले।[6]

अध्ययन की आवश्यकता

आधुनिक युग में वेदों का अध्ययन एक महत्वपूर्ण और आवश्यक दृष्टिकोण है, जो समकालीन समस्याओं और जीवन के प्रश्नों का सुलझाने में सहारा प्रदान कर सकता है। वेदों का अध्ययन न केवल एकाधिकारिक धार्मिक दृष्टिकोण से होता है, बल्कि इससे आधुनिक युग के मानव जीवन को समझने में भी मदद मिलती है।आधुनिक समाज में जीवन का एक अभूतपूर्व स्तर है जिसमें तेजी से बदलाव हो रहा है। इस संदर्भ में, वेदों का अध्ययन व्यक्ति को उनके आदिकालिक मूल्यों और सिद्धांतों के साथ जोड़कर सुचारू रूप से आधुनिक समस्याओं का सामना करने में मदद करता है।[7] वेदों में छिपे तत्त्वों, धार्मिक आदर्शों, और नैतिकता के सिद्धांतों का समीक्षात्मक अध्ययन से व्यक्ति को अपने जीवन के उद्देश्य की स्पष्टता मिलती है।वेदों का अध्ययन आधुनिक समाज को सतत अनुशासन और समरसता की दिशा में प्रेरित कर सकता

[6]यजुर्वेद, 25.21

[7]हिरण्यगर्भ (ऋग्वेद 10.121)

है। इससे समझ में आता है कि कैसे सामाजिक संबंध, परिवार, और समाज में सहयोग और समरसता बनाए रखना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, वेदों में व्यक्त किए गए आध्यात्मिक अध्ययन से व्यक्ति को अपने आत्मा का साक्षात्कार करने का भी मार्ग प्रशस्त होता है।आधुनिक युग में वेदों का अध्ययन एक सुगम, योग्य, और सर्वांगीण दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिससे मानव जीवन को संतुलित, सजीव, और समर्थनशील बनाए रखने में सहारा मिलता है।

निष्कर्ष

आधुनिक युग में वेदों का महत्व और प्रासांगिकता को समझने के लिए हमें एक नए परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता है। वेद एक प्राचीन भारतीय धार्मिक और दार्शनिक साहित्य का स्रोत है, लेकिन इसका महत्व आधुनिक युग में भी बना हुआ है।वेदों में समय के साथ सुनिश्चित रूप से परिवर्तन होता रहा है, लेकिन उनमें छिपा ज्ञान और मूल्यों का महत्व आज भी अत्यधिक है। वेदों में विशेष रूप से धर्म, नैतिकता, और जीवन के उद्देश्य के बारे में बताया गया है, जो आधुनिक समाज के लिए भी मार्गदर्शन करने वाला है।आधुनिक युग में वेदों की प्रासांगिकता उनके अद्यतित और स्थायी सिद्धांतों में छिपी होती है। इनमें व्यक्ति की स्वतंत्रता, समाज में न्याय, और सामाजिक समरसता के लिए मार्गदर्शन होता है। धार्मिक और आध्यात्मिक प्रक्रियाओं में इनका अध्ययन आज भी जीवन को एक सांत्वना और संरचना प्रदान करने में सहायक है।आधुनिक युग में वेदों का महत्व और प्रासांगिकता उनके दर्शनिक और नैतिक सिद्धांतों के माध्यम से ही नहीं, बल्कि उनके अभिव्यक्ति और समर्थन के रूप में भी है, जो आधुनिक समाज को एक समृद्ध, सहायक, और समरस दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है।

सन्दर्भ-सूची

1. ऋग्वेद, पुरुष सूक्त 10.90.9
2. अथर्ववेद, 3.30.2
3. यजुर्वेद
4. सामवेद
5. चाणक्यनीति, 2.3
6. वही, 2.4
7. ऋग्वेद, पुरुष सूक्त, 10.90.12
8. अथर्ववेद, 1.34.2-3
9. यजुर्वेद, 25.21
10. नासदीय (ऋग्वेद10.129)
11. हिरण्यगर्भ (ऋग्वेद10.121)
12. सामनस्य (अथर्ववेद 3.30)
13. माण्डूक्य
14. वृहदारण्यक
15. याज्ञवल्क्य